आवश्यक है कि इस परम सत्य को उसी रूप में ग्रहण किया जाय जिस रूप में श्रीभगवान् ने इसका उपदेश किया है। इस प्रकार जानने वाला पुरुष बुद्धिमान् और दिव्य ज्ञान में सिद्ध हो जायगा। भाव यह है कि श्रीभगवान् के इस दर्शन को समझने और उनकी दिव्य सेवा में तत्पर हो जाने से मनुष्यमात्र त्रिगुणमयी माया के सम्पूर्ण दोषों से मुक्त हो सकता है। भक्तियोग वस्तुतः अध्यात्म बोध का मार्ग है। जहाँ भक्तियोग है, वहाँ प्राकृत दोष नहीं रह सकते। श्रीभगवान् और उनके भक्तियोग में भेद नहीं हैं; दोनों दिव्य हैं, अर्थात् भगवती अंतरंगा शक्ति से युक्त हैं। श्रीभगवान् मानो सूर्य हैं और अविद्या जैसे अंधकार है। जहाँ सूर्य है, वहाँ अंधकार नहीं रह सकता। ऐसे ही, जो पुरुष सद्गुरु के मार्गदर्शन में भक्तियोग के परायण हैं, उनमें अविद्या का लेश भी नहीं रहता।

मनुष्यमात्र को बुद्धिमान् और शुद्ध होने के लिए इस कृष्णभावना को अंगीकार कर भक्तियोग में संलग्न हो जाना चाहिए। जब तक कोई भगवान् श्रीकृष्ण के इस पुरुषोत्तम-तत्त्व को जानकर भक्तियोग के परायण नहीं होता, किसी सामान्य मनुष्य की गणना में वह चाहे कितना भी बुद्धिमान् क्यों न हो, परन्तु वास्तव में वह बुद्धिमान् नहीं है।

अर्जुन को **अनघ** कहने का गूढ़ अभिप्राय है। तात्पर्य यह है कि सब प्रकार के पापों से मुक्त हुए बिना श्रीकृष्ण को जान पाना बड़ा कठिन है। मनुष्य को सब दोषों और पापकर्मों से छूट जाना होगा; तभी वह इस तत्त्व को जान सकेगा। परन्तु भक्तियोग इतना शुद्ध और शक्तिशाली है कि जो एक बार इसमें प्रवृत्त होता है, वह अपने-आप निष्पाप शुद्धावस्था को प्राप्त हो जाता है।

शुद्ध भक्तों के सत्संग में पूर्ण कृष्णभावनाभावित होकर भक्तियोग का आचरण करते हुए कुछ दोषों को पूर्ण रूप से दूर कर देना चाहिए। सबसे पहले हृदय की दुर्बलता को जीतना है, क्योंकि माया पर प्रभुत्व की इच्छा पतन का सबसे बड़ा कारण है। ऐसी इच्छा के कारण ही मनुष्य भक्तियोग का त्याग कर बैठता है। हृदय की दूसरी दुर्बलता यह है कि जैसे-जैसे माया पर प्रभुत्व करने की प्रवृत्ति बढ़ती है, वैसे-वैसे ही वह जड़ तत्त्व में और जड़ तत्त्व के स्वत्व में अधिक आसक्त होता जाता है। भवरोग के दुःख हृदय की इन दुर्बलताओं के कारण ही हैं।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे पुरुषोत्तमयोगो नाम पंचदशोऽध्यायः।।१५।।
इति भक्तिवेदान्त भाष्ये पंचदशोऽध्यायः।।